संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में माननीय अध्यक्ष का भाषण

माननीय उप-राष्ट्रपति जी

माननीय प्रधानमंत्री जी

माननीय संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी जी

राज्य सभा में सदन के नेता श्री पीयूष गोयल जी

राज्य सभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री मलिकार्जुन खरगे जी

लोक सभा में सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता श्री अधीर रंजन चौधरी जी

संसद के ऐतिहासिक केन्द्रीय कक्ष में उपस्थित सम्मानीय सदस्यगण

_____

आज संसद भवन के ऐतिहासिक केन्द्रीय कक्ष में, जो हमारी देश की आजादी का साक्षी रहा है, जो संविधान निर्माण का साक्षी रहा है, जिसमें अनेक परिवर्तनकारी एवं ऐतिहासिक निर्णय हुए हैं, इस केन्द्रीय कक्ष में हमारे देश के माननीय राष्ट्रपतियों एवं कई राष्ट्राध्यक्षों ने अपने संबोधन से हमारे लोकतंत्र के प्रति आस्था को व्यक्त किया है।

इस केन्द्रीय कक्ष से आज हम लोग नए संसद भवन की ओर, नयी आकांक्षाओं, अपेक्षाओं एवं नई उम्मीदों के साथ प्रवेश कर रहे हैं।

आज इस अवसर पर मैं उन स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धा से सिर झुकाता हूँ जिन्होंने हमारे भविष्य के लिए, हमारे कल के लिए अपना वर्तमान बलिदान कर दिया। मैं आज उन महान नेताओं को भी नमन करता हूँ, जिन्होंने इसी केन्द्रीय कक्ष में संविधान के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया तथा जिन्होंने देश में आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन लाने का दायित्व निभाया।

आज हम उन माननीय सदस्यों का भी स्मरण करते हैं, जो अब हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन जिन्होंने इस संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए देश की प्रगति में योगदान दिया।

मैं आज संसद के उन सभी वर्तमान माननीय सदस्यों का भी हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, जिनके लंबे संसदीय अनुभवों का लाभ आज भी हमें मिल रहा है।

यह संसद भवन अनेक ऐतिहासिक घटनाओं, निर्णयों और परिवर्तनकारी कानूनों के निर्माण का साक्षी रहा है।

हमारी संसद कई घटनाओं का मंच रही है जिसने पिछले 75 वर्षों में इस देश को एक स्वरूप दिया है। हमारी संसद देश की करोड़ों जनता की अभिव्यक्ति एवं भावनाओं का माध्यम रही है, जहां हमने लोकतांत्रिक संस्कृति के अनुरूप चर्चा और संवाद से अनेक चुनौतियों का समाधान निकाला और श्रेष्ठता के कई प्रतिमान भी स्थापित किए।

इन 75 वर्षों की संसदीय लोकतंत्र की गौरवशाली यात्रा में हमने देश में क्रांतिकारी बदलाव किए। आज देश की जनता नए भारत के लिए आकांक्षी है। आज लोगों की हमसे अपेक्षाएं बढ़ी हैं, आकाक्षाएं बढ़ी हैं, उम्मीदें बढ़ी हैं।

ऐसे में हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि हम अपने संवैधानिक दायित्वों का शुद्ध अन्तः करण से निर्वहन करें और उनकी अपेक्षाओं, आकांक्षाओं और उम्मीदों को पूरा करते हुए आकांक्षी भारत के सपने को साकार करें।

मान्यवर, हम सबका सौभाग्य है कि हम ऐसे कालखंड में संसद में जनता का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जिस समय भारत हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

हमारी लोकतांत्रिक संस्कृति और श्रेष्ठ नेतृत्व के कारण हम पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में एक साथ लेकर वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए भी सार्थक भूमिका निभा रहे हैं।

आज हम जब नए भवन में प्रवेश कर रहे हैं तो विकसित भारत बनाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दोहराने का भी अवसर है। हमारा संकल्प है कि हम इसी संसदीय लोकतंत्र से सामूहिक चर्चा और संवाद से, कठिन परिश्रम से और सारे देश की जनभागीदारी से इन आकांक्षाओं को पूरा करेंगे।

विश्व के सबसे बड़े संसदीय लोकतंत्र होने के नाते हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि हमारी संसद हरेक मुद्दे पर चर्चा करे, कानून बनाते समय सदन में सारगर्भित और सकारात्मक चर्चा हो, ताकि हमारे देश को और अधिक समर्थ एवं समृद्ध बनाने में संसद अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा सके।

आज आजादी के इस अमृतकाल में हम वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

विकसित भारत बनाने का यह लक्ष्य हमारी संसद के माध्यम से साकार हो, हम ऐसे संकल्प की प्रतिबद्धता के साथ नए भवन में प्रवेश करें।

आज गणेश चतुर्थी का शुभ दिन है। ऐसे शुभ दिन में हम अच्छी परंपरायें, अच्छी परिपाटियां, अच्छी प्रथाएं और अच्छे अनुभव यहां से साथ लेकर जाएं और संसद के नये भवन में उनको स्थापित करें ताकि विश्व के लिए भारत का लोकतंत्र मार्गदर्शक बन सके। नया भवन हमारे देश की आकांक्षी जनता के लिए परिणामदायक हो, परिवर्तनकारी हो ताकि हमारे संविधान निर्माताओं ने समानता, न्याय और बंधुता का जो संदेश दिया हम उसे पूरा कर सकें।

हम अपनी संसद को देश की जनता की सेवा में सच्चे भाव से समर्पित करें इसी अपेक्षा के साथ मैं इस पावन धरती को प्रणाम करता हूँ, इस भवन को प्रणाम करता हूँ।

जय हिन्द।

———